بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-05.04.2024 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

क़ुर्आने करीम तथा हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की कुछ दुआएँ।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 05 अप्रैल 2024, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले जुम्अः का मैंने दुआ का विषय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवालों की रोशनी में बयान किया था, यहो आज भी जारी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं व्याकुल की दुआएँ सुनता हूँ, तो व्याकुल से अभिप्रायः केवल पीड़ित ही नहीं बल्कि ऐसा व्यक्ति है जिसके सब रास्ते कट गए हों। अतएव जब हम दुआ के लिए अल्लाह तआला के आगे झुकें तो ऐसी अवस्था बनाकर झुकें तथा अल्लाह तआला के समक्ष यह दुआ करें कि तेरे अतिरिक्त हमारा कोई नहीं तथा हम तेरे ही आधीन हैं तथा तुझ पर ही भरोसा करते हैं करते हैं।

हर अहमदी को यह बात अपने मस्तिष्क में अच्छी तरह बिठा लेनी चाहिए कि व्याकुलता की अवस्था पैदा करें, यदि अपनी दुआओं को क़बूल करवाना चाहते हैं। इस समय मैं कुछ क़ुर्आन से तथा सुन्नत से एवं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का भी दोहराऊँगा। इन पर निरन्तर ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले तो सूरः फ़ातिहः है, नमाज़ के अतिरिक्त भी इसे दोहराते रहना चाहिए, इसको अत्यंत ध्यान पूर्वक समझ कर पढ़ने तथा विर्द (जाप)करने से इंसान अल्लाह तआला के निकट होता है।

फिर क़ुर्आन करीम की एक दुआ है-

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (अल-बक़रा-202)

फिर इस दुआ को भी आजकल अति व्याकुलता के साथ करना चाहिए।

رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (अल-बक़रा-251)

फिर इस दुआ का भी बार बार विर्द करना चाहिए।

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

(अल-बक़रा-287)

फिर ईमान की मज़बूती के लिए यह दुआ बहुत पढ़नी चाहिए।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ (आले इमरान-9)

हुज़ूरे अनवर ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बताई हुई कुछ दुआओं का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को नमाज़ में मांगने वाली ये दुआ सिखाई-

اَللّٰهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيْرًا وَلَمْ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ، فَاغْفِرْلِي مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ۔

ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर अत्यधिक अत्याचार किया, तथा तेरे अतिरिक्त कोई गुनाहों को माफ़ नहीं कर सकता। अतः तू अपनी कृपा से मेरी मग़फ़िरत फ़रमा तथा मुझ पर दया कर। निःसन्देह तू ही क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

नबो करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब किसी समस्या के कारण कोई कठिनाई होती तो आप स. फ़रमाते हैं कि-

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ۔ (مشكوٰة المصابيح كتاب الدعوات)

अनुवाद- ऐ जीवित तथा दूसरों को जीवित रखने वाले! ऐ क़ायम तथा दूसरों को क़ायम रखने वाले! अपनी रहमत के साथ मेरी मदद फ़रमा।

अतएव ये दुआएँ ही हैं जो हमारे निजि जीवन मं भी तबदीली लाएँगी। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ये दुआएँ हैं इनका अनुवाद याद करके अथवा इनका अभिप्रायः को समझ कर, इस तरह हमें भी दुआएँ करनी चाहिएँ।

फिर बुख़ारी में एक दुआ इस तरह मिलती है कि- اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُوراً، وَبَصَرِي نُوراً، وَفِي سَمْعِي نُوراً، وَعَنْ يَمِيْنِي نُوراً، وَعَنْ يَسَارِيْ نُوراً، وَفَوْقِي نُوراً، وَ تَحْتِي نُوراً، وَ اَمَامِيْ نُوراً، وَ خَلْفِي نُوراً، وَجْعَلْ لِي نُوراً

ऐ अल्लाह! मेरे दिल में नूर रख दे, मेरी दृष्टि तथा समझबूझ में नूर रख दे, मेरी समाअत (सुनने की शक्ति) में नूर रख दे, मेरे दाएँ भी नूर रख दे, मेरे बाएँ भी नूर रख दे, मेरे ऊपर भी नूर हो और मेरे नीचे भी नूर हो तथा मेरे आगे भी नूर रख दे तथा मेरे पीछे भी नूर रख दे तथा मेरे लिए नूर ही नूर कर दे।

फिर आप स. की दुआ का यूँ वर्णन है-

اَللّٰهُمَّ إِنِّي اعُوْذُبِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَالْاَهْوَاءِ (तिमज़ो)

ऐ मेरे अल्लाह! मैं बुरे नैतिक आचरण तथा बुरे कर्मों से एवं बुरी इच्छाओं से तेरी शरण चाहता हूँ। यह अति संक्षिप्त सी दुआ है, यदि इंसान इसको व्याकुल होकर करे तो अनेक बुराईयाँ भी दूर हो जाएँगी तथा नेकियाँ पैदा हो जाएँगी।

फिर दुशमनों के बुरे इरादों के विरुद्ध दुआ है-

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ، وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ (अब दाऊद) ऐ अल्लाह! हम तुझे उनकी छाती के मुक़ाबले पर रखते हैं तथा उनके उपद्रव से तेरी शरण में आते हैं। यह दुआ भी आजकल अहमदियों को अत्यधिक पढ़नी चाहिए, दुशमनों की चालों से अल्लाह तआला हमें सुरक्षित रखे।

हुज़ूरे अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ दुआएँ बयान करते हुए फ़रमाया कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मौलवी नज़ीर हुसैन साहब सख़ा देहलवी के पत्र के उत्तर में उन्हें नमाज़ में लीनता प्राप्त करने का मार्ग लिखते हुए फ़रमाया- अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुह, तरीक़ा यही है कि नमाज़ में अपने लिए दुआ करते रहें तथा केवल ऊपरी एवं अरूचि कर नमाज़ से संतुष्ट न हों बल्कि जहाँ तक सम्भव हो, ध्यान पूर्वक नमाज़ अदा करें। ध्यान पैदा न हो तो पाँचों समय ख़ुदा तआला के समक्ष नमाज़ में हर एक रकअत के बाद खड़े होकर यह दुआ करें- ऐ

ख़ुदा तआला, क़ादिर व जुलजलाल! मैं पापी हूँ तथा अत्यधिक पाप के विष ने मेरे दिल तथा रोम रोम को दूषित किया है कि मुझे विनयता एवं लीनता नमाज़ में नहीं मिल रही, तू अपनी कृपा एवं दया से मेरे पापों को क्षमा कर दे तथा मेरी मूर्खताओं को माफ़ कर दे तथा मेरे हृदय को कोमल कर दे और मेरे दिल में अपनी महानता एवं अपनी नाराज़गी का भय एवं अपनी मुहब्बत बिठा दे ताकि उसके द्वारा मेरे दिल की कठोरता दूर होकर नमाज़ में लीनता प्राप्त हो जावे।

दुआ की क़बूलियत के लिए यह भी अति आवश्यक है कि हम अधिक से अधिक दरूद शरीफ़ पढ़ें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ भी दे कि हम अपने दिल से ये दुआएँ करने वाले हों। अपनी भाषा में भी दुआएँ करें तथा उस वास्तविक व्याकुलता एवं दर्द के साथ दुआएँ करें कि दिल की गहराईयों से ये दुआएँ निकल रही हों। रमज़ान की बरकतों को सदैव क़ायम रहने के लिए भी दुआ करें।

हमें तथा हमारी पीढ़ियों को युद्ध की आग से सुरक्षित रहने तथा उसके बाद के प्रदूषण से सुरक्षित रहने के लिए बहुत दुआएँ करें। अब लगता है कि यह जंग सामने खड़ी है बल्कि विश्व युद्ध शुरु हो चुका है परन्तु दुनिया के शासकों को इसकी कोइ चिंता नहीं। ऐसे में अहमदियों को अपने आपको ख़ुदा के निकट करने तथा दुआओं में व्याकुलता पैदा करने की अति आवश्यकता है ताकि उनके उपद्रव बच सकें। अल्लाह तआला मानवता को बचा ले तथा हमें दुआओं में भी अपना हक़ अदा करने का सामर्थ्य प्रदान करे, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131